समुदाय व संरक्षण

समुदाय आधारित जैवविविधता संरक्षण तथा आजीविका सुरक्षा

अंक ६, नं.१ डिसेंबर २०१४ - मे २०१५

विषय सूंची

आरंभिक विचार

१. समाचार और जानकारी

- सौर उर्जा का उपयोग
- सेंहत और सेंहत से जुड़ी पहल
- पर्यावरण शिक्षा और जीविका
- जिम्मेदार नागरिक

२. दृष्टिकोण

- क्या परिस्थितिकीय और पर्यावरणीय सोच एक है ।
- पीक ऑयल:हमारा संसार क्यों पलट गया
- एक ग्रीन अर्थव्यवस्था
- आहार पर विचार

३. संगम

- विकल्प संगम

४. चिंतन

- शांति

५. आशा की किरण

- अमृतधारा:बिना किसी प्लास्टिक कचरे के स्वच्छ पानी की सहज उपलब्धता
- समुदाय आधारित स्वास्थ सेवायें
- शहरों में साइकल
- कल्पना
- साइक्लो नोमिआ:– साइकल मरम्मत पर कार्यशाला

आरंभिक विचार

लंबे समय से एक भयावह साया वैश्विक समस्या बना हुआ है। बर्लिन की दीवार के ढह जाने से आये ठहराव के बाद पूँजी से जुड़े संपत्ति के तर्कों ने प्रकृति और सभ्यता दोनों को नुकसान पहुँचाया है। जिससे इस पर एक बार फिर सवाल उठे है। यह भयावह साया एक तरफ जहाँ इस्लामिक रूढिवाद[1] के रूप मे सामने आया है वही इसके समाधान के विकल्प भी बर्बर है। दूसरी ओर एक स्थिती धर्म निरपेक्ष, प्रगतिशील, सुधारवादी और प्रजातांत्रिक ताकतों के साथ में आने की हैं जिसमें लोगों की भागीदारी के साथ शांति, स्वतंत्रता, न्याय, मानव अधिकारों के प्रति सम्मान और स्थायित्व देना हैं। कई लोगों को यह भी डर है कि यदि दूसरा पक्ष सफल नही होता है तो यह जीवन के लिये गंभीर खतरा होगा। हमारी जानकारी इस ओर इशारा कर रही है कि मानवीय सभ्यता के साथ समूची पृथ्वी के लिये संकट की घड़ी हैं जिसमें परिस्थितिकीय को गंभीर नुकसान होना तय है।

दूसरी ओर, सामाजिक समतावाद लाने के लिये काम करने वालो से यह सवाल किया जाता कि पिछली शताब्दी में विश्व के सुधारवादी और प्रजातांत्रिक पहलू में जो भी सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तन हुयें हैं, क्या वे सभी सर्वाधिकार वाद के रूप में नही होगे? क्या उसी भाषा में बात करने वाले लोग कल्पनाओं के युग मे नही रह रहे है? क्या वे लोग और कुछ नही बल्कि सिर्फ परेशानियाँ खडी करने वाले हैं और देश के आर्थिक विकास जैसे जी.डी.पी की बढोत्तरी में रूकावट डाल रहे हैं? क्या वास्तविकता से परे काल्पनिक विकल्पों पर काम करने वाले लोगों को एक बार हमेशा के लिये यह बता दिया जायें कि माग्रेट थेचर सही थी कि पूँजीवाद का कोई विकल्प नही हैं। और वास्तविकता में मानवता पूँजीवाद के साथ मिलकर शिखर पर पहुँची हैं (जिसे सभ्य भाषा मे उदारवादी प्रजातंत्र कहते हैं)। इसने अबतक स्वयं निर्धारित व्यवस्थाओं की तुलना मे विश्व को उत्तम मुकाम (स्थान) दिया है। अगर यह मानव के विकास के आखिरी स्टेज को प्रदर्शित करता है तो बडी समस्या की स्थिति है। इस पर फ्रांसिस फुकयामा कहते है कि मानवता इतिहास के अंत पर पहुँच चुकी है। क्या यह पूरी परीस्थिति एक के अधिपत्व को बताती है? इन प्रश्नों के साथ समस्या यह है कि जैसे हि इनको उठाया जाता हैं वैसे हि एक से ज्यादा जवाबों की संभावना तैयार हो जाती है। अत! इन प्रश्नों को केवल उठाने या पूँछने मात्र से हि थेचरवाद के विकल्प से ज़ुडी कल्प्ना की स्थिती स्वयं हि तैयार हो जाती है।

''कल्पना'' शब्द को यहाँ हल्के मे उपयोग नही किया गया था। और, ऐसा जान पडता है की वास्तविकता में आज भी ऐसी कई कथा कथित वास्तविकता से परे कल्पनायें है जो विकल्पों की कल्पना कर रही है। अवसर प्रभावी मुख्यधारा से उपेक्षित इन लोगों ने रहने के वैकल्पिक तरीकों का निर्माण किया हैं या निर्माण कर रहे हैं, ये लोग कभी छोटे गाँव ओर छोटे समुदाय के स्तरपर और कभी ठीक हमारे शहर की नाक को नीचे (जैसे ट्रोजन हॉर्स) विकल्पों के निर्माण में लगे हैं। ऐसा भी नही है कि ये सभी लोग एक दूसरे को जानते है या एक दूसरे से परामर्श किया हैं या किसी कार्यक्रम के तहत काम कर रहे है। वास्तविकता में ये लोग एक दूसरे से बेखबर अनायास हि अपने विकल्पों पर प्रयोग शुरु किया हैं और उनकी यह पहल स्थानीय मुद्दों के समाधान के लिये है। जबकि दूसरो ने यह काम वर्तमान व्यवस्था से मोहभंग होने कारण किया है और अन्य ने, राजनैतिक विरोध में गैर बराबरी के संघर्ष से थककर विकल्पों पर काम किया है ताकि वे इस स्थिती से बचकर बाहर आजाये। इसके पीछे कोई भी कारण हो लेकिन इसमे कुछ जादुई जरुर है। यदि आपस में एक दूसरें से अनजान हैं फिर भी इन लोगों ने जैसे कीसी अपने नाम को 'कल्पनाशील पार्टी' की सूंची में जोड दिया है। ये लोग इस विश्वास के साथ संघर्ष कर रहे है कि कल्पना वाले जादुई क्षेत्रों, से प्रेरित नये द्वीपों और स्वतंत्र होकर हमारे इस नये अंधकार युग मे कुछ और सार्थक करने की चाहत रखते है । इसके अलावा ये लोग इस स्थानों, छिपी सतहों और नये सामर्थ के साथ वर्तमान पुनर्उत्पादक व्यवस्था पर सामने से प्रहार करते है। काम के प्रति नीरसता और सोच को दूषित करने के विपरीत एक परिपूर्ण जीवन की चाहत रखते है। ये लोग सर्वाधिकार वादी बडी मशीनों के विरोध मे सम्मिलित रुप में छोटे आंदोलनों को तैयार करते है । इन लोगों के अस्तित्व को उनके काम की प्रामाणिकता और चेतना एक सकारात्मक उर्जा मिलने वाले समर्थन से आंका जा सकता है। यह राजनिति से बचना नही बल्कि राजनिति को फिर से बनाना है। यहाँ ग्रेबिला गर्सिया मार्क्यूंजि के ये शब्द उचित जान पडते है कि एकाकीपन के सौ साल बाद यह शरारती लोग अपना समय स्थायी विध्वंस का संकरे रास्ते मे पीछा करते व्यतीत करते है।

ऐसा जान पडता हैं कि आजादी की नयी माया एक काल्पनिक भाषा का चलन हुआ है। एक जो हस्ताक्षेंप और संबंध बनाने की है तो एक कथाकथित पुराने राजनतिक विषय में महत्त्वपूर्ण बदलाव से दूरी बनाने कि है। औद्योगिक कामगार बहुत से राजनैतिक विषयों को साथ उभरने की अनुमति देते है। भावी पीढ़ी को कौन यह कहानियाँ बतायेगा कि विश्व के ऊपरसे नीचे आने का मौलिक परिवर्तन से जुडा ऐतिहसिक कार्य कैसे हुआ? शायद ये कहानियाँ वास्तविकता का स्वरुप लेने के पहले कल्पनायें मात्र थी। मार्क्यूज के अमर शब्दों मे 'हम खोजकर्ताओ की कहानियों जो किसी चीज पर विश्वास करते है, यह मानने का अधिकारी समझते है कि जीवन से जुड़ी नयी व्यापक कल्पना के साथ जुडना कभी भी देरी वाला नही होता है, जहाँ यह

---

१. यह कहने का तात्पर्य नही है कि अधिकारों को केवल इस्लामिक रुढिवाद द्वारा बताया गया है। इसको समानता के साथ हिंदू और क्रिस्चियन रुढिवाद में भी बताया गया है। दूसरो में कम या ज्यादा पूँजीवाद व्यवस्थाओं को अपनाया है और स्वयं इस दोष की वैधता तय की है जबकि पहला नयी उदारवादी साम्रज्यवाद कि विस्तारवादी के विपरीत हैं।

कोई नही बता सकता है कि दूसरे कैसे मारे जायेंगे जहाँ प्यार सच है और खुशी संभव है और जहाँ लोग सौसाल के एकाकीपन की आलोचन करते हैं; अंत मे हमेशा केलिये पृथ्वी पर एक दूसरा अवसर आयेगा ।'

ऐसे शरारती लोंग जो किसीभी चीज पर विश्वास करेगे चाहे वह असंभव ही क्यों न हो क्योकि वे इतने यथार्थ वादी हैं, ऐसे सभी लोगों को यह अंक समर्पित है ।

मिलिंद

१. समाचार और जानकारी

सौर उर्जा का उपयोग

भारत में सौर शक्ति उर्जा का एक उभरता हुआ साधन है । सौर उर्जा, उर्जा के विकल्प के तौर पर उन सभी के लिये भी है जो अभी तक उर्जा के उपयोग से पूरी तरह वंचित रहे है । सौर उर्जा के उपयोग को लेकर ग्रीनपीस ने सीडस (सेंटर फॉर इनर्जी डेवलमेंट) और बेसिक्स के साथ मिलकर बिहार के धरनी गॉव में और उर्जा को लेकर एक अनोखी पहल की है । जिसके तहत और उर्जा की के ग्रिड की स्थापना करना है । यह पहल क्षेत्र में वर्तमान में चल रही उर्जा की समस्या से निजात दिलायेगा क्योकि इस गाँव में पिछले लगभग ३० वर्षों से बिजली नही पहुँची है। यह प्रयास समाज को उर्जा सशक्तिकरण देगा जिससे उनकी जीविका नवीनीकृत और स्वच्छ तरीकें से विकसित होगी।

स्रोत:http://adb.org/sites/default/fuiles/pub/2013/affordable-Solar-Power-India-energy-Poor-homes:Pdf

सेहत और सेहत से जुडी पहल

नयी–नयी तकनीकों लगातार लोगों के उपयोग के आते रहना चाहियें जिससे खराब सेहत वाले बच्चों और बड़ो के स्वास्थ को अच्छा बनाया जा सके। हाथ धोने की आदत छोटी और साधारण है लेकिन जीवन की सुरक्षा से जुड़ा है। इसके बारे में जागरुकता लोगोंतक पहुंचाने मे स्वास्थ क्षेत्र से जुड़ी निर्माण संस्था के सर्च कार्यक्रम के सदस्य डॉ पवन कुमार गुलाबराव ने गढचिरौली, महाराष्ट्र के लिये पैरो से चलाने वाली एक हाथ धोने की मशीन को बनाया है। यह मशीन जल संरक्षण भी करती हैं और जिसे रु ३५ से भी कम में तैयार किया जा सकता है। यह मशीन हाथ धोने में साबुन के महत्व को बताती हैं और उपयोग को बढावा देती है। डॉ. पवन चलने वाले कार्यक्रम के सहयोग से बच्चों के लिये स्वास्थ शिक्षा पर कार्यशालाओं को आयोजित कर रहे हैं और हाथ धोने को प्रोत्साहित करने के लिये हाथ धोने से जुड़े गीतों को लोगों के लिये बनाते ताकि लोग इस पहल की ओर आकर्षित हो और इससें जुड़ी।

स्रोत: https://in.news.yahoo.com/attempt-Sucide-not-crime-recomends-panel 104530591.html.

पर्यावरण शिक्षा और जीविका

शिक्षा व्यवस्था में सुधार के माध्यम से नौजवानों का सशक्तिकरण मजबूत भविष्य की नींव हो सकता हैं। लद्दाख में सौर शक्ति संस्थान सिममोल (लद्दाख के विद्यार्थियों के शैक्षणिक और सांस्कृतिक आंदोलन) ने इसको महत्वपूर्ण रुप से लद्दाखी शिक्षा से जोड़ा हैं। इसके तहत लद्दाखी विद्यार्थी पर्यावरण शिक्षा को स्थानीय ज्ञान के आधार पर सीख रहे हैं क्युंकि दिल्ली द्वारा निर्धारित विषय सूंची वाली किताबे उन पर्यावरणीय मुद्दों को बताती है जो उनके संबंधित नही

है। इस कार्यक्रम से जुड़े शिक्षकों और स्टाफ के सकारात्मक व्यवहार और प्रोत्साहन से विद्यार्थियों को आत्मविश्वास मिलता है। ये लोग कक्षा १० में असफल विद्यार्थियों को अध्ययन के लिये गैर परंपरागत विषयों जैसे परंपरिक लद्दाखी संगीत, स्थायित्व और सामाजिक मुद्दों पर विचार करनें में पूरा सहयोग करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि इससे ऐसे विद्यार्थी तैयार होते है जो शैक्षणिक व्यक्तिगत और व्यवसायिक तौर पर सफल होते है और जिसमे से कई पर्यावरण आधारित जीविका और उद्यम को अपनाते हैं।

स्रोत: http: //Times of India.mdiatimes.com/hpme/environment/global-warming/How-will-Climate-change-affect-livelihoods-in-South.asia/article.Show/35617840.cms.

जिम्मेदार नागरिक

बैंगलूर में "अगली" इंडियंस नाम के एक जन समूह ने शहर को साफ–सुथरा बनाने के लिये एक अभियान की शुरुआत शहर के अलग–अलग स्थानों पर की है। इन लोगों का लक्ष्य है कि उनका शहर एक आदर्श शहर हो और जहाँ कचरे और पान के दाग न हो और शहर के प्रत्येक ब्लाक में मिलने वाली जन सुविधायें व्यवस्थित और अच्छे स्तर की हो।

यह जन समूह बिना किसी दिखावें या नेता के नेतृत्व में लोगों से सोशल मीडियां में ऐसी जगहों की जानकारी देने को कहता है जहाँ सफाई और व्यवस्था को बनाने की आवश्यकता हैं। सोशल मीडियां पर मिली जानकारी के आधार पर "अगली इंडियंस" तत्तपरता से अपनी जिम्मेंदारी को निभाता है और अपने इस प्रयास में ज्यादा लोगों को इस तरह करने के लिये आमंत्रित करता हैं। जन समूह का यह प्रयास समुदाय की समस्याओं का एक जन आधारित समाधान है।

स्रोत:http://www.edie.net/news/5/Resource-management-firm-FCC-environment-unveils-mapping-The-Politics-of-waste-report/.

✦✦

२. दृष्टिकोण

क्या परिस्थितकी और पर्यावरणीय सोच एक हैं?

वर्तमान में हो रहे संवादों और दैनिक चर्चाओ में "परिस्थितकीय" से जुड़ी चिंतायें "पर्यावरण" से जुड़ी चिंताओं का पर्यावाची बन गयी है। व्यापक रुप से यह स्वीकार कर लिया गया है कि परिस्थितकीय पर्यावरणीय वैश्विक दृष्टिकोण एक है। ऐसा कहा जाता है कि "पर्यावरण" केवल मानवीय समाज के विचारों की उपज हैं जिसकों व्यापक रुप में अर्थव्यवस्था से जोडकर देंखा जाता है। आज के समय में यह विचार सामान्य होगया है कि "विकास"के लक्ष्यों को पर्यावरण सुरक्षा के साथ संतुलित करने की जरुरत है। यह विचार मंत्री, नीति बनाने वाले, अर्थशास्त्री और पत्रकार सभी रखते हैं और यह स्थिती बताती है कि कैसे मुद्दों को बनाया जाता है। लोगों के सामने यह रखा जाता है कि पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिये हमें अपने रहने के तरीकों और सोचनें की दिशा के साथ आपस में एक दूसरे के साथ जुड़ने और प्रकृति में आधारभूत परिवर्तन लाने की आवश्यकता नही है। बल्कि केवल कुछ छोटे क्षतिपूर्ती जैसे जीवनशैली में बदलाव लाकर और उपयोग करने के पैटर्न (प्रारुप) मे बदलाव पर्याप्त है इस पर विश्वास भी लोगों ने जताया है। गहन विचारों और समझारी वाले चिंतन की जगह समस्या के समाधान में जल्दबाजी और ऊतावले पन की प्रवृतति ने अपने को स्थापित किया है। जबकि, यदि कोई धैर्य के साथ इस बात का चिंतन करता है कि परिस्थितकीय और पर्यावरण के बीच क्या अंतर है तो मालूम होता है कि दोनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है ।

पर्यावरण के एक संदर्भ से जुड़े कुछ पहलुओं पर विचार करते है तो कुछ तथ्य सामने आते है। इसी प्रकार पर्यावरण के एक वैश्विक विचार में चीजों को टुकडों में, अलग–अलग स्थितियों के संदर्भ में देखा जाता है। जैसा कि पहाडों पर मिलनें वाला बॉक्साइड एक बस्तुं है, लेकिन इसका दूसरा पहलू यह भी है कि इसमें पानी भी एकत्र होता है जो घाटी में पाये जाने वाले पेडों और यहाँ के किसानों के खेतों को जीवन देता हैं। इसका एक पक्ष यह भी है कि यह केवल प्रकृति से ही नही जुड़ा हुआ है बल्कि बड़े स्तर पर मानव जीन (हमारे दिमाग और शरीर के कई हिस्सें) से भी संबंधित है। इसका उपयोग जीविका के साधन के रुप में होने के साथ इसका दोहन संसाधन या उत्पदक के रुप में भी होता है। (जैसा कि जिस सहजता से हम मानव संसाधनों के बारे मे अब तक कहते आये है या लोगों को संबोधित करने कि लिये उसी संबंध सूचक का उपयोग करते है जो किसी बस्तु या चीज के लिये करते है। यह व्यवहार ज्ञान का व्यवहारिक नैतिक मूल्य है। १९७० में लेखक जब पटना के एक स्कूल में थां तो शिक्षक इस तरह को लाल मार्क लगा देते और "That" शब्द को "who" और whom से सुधार देते थे। तीसरा,जैसेकि पहले बताया गया है कि

एक पर्यावरणीय सोच में यह भी माना गया है कि अर्थव्यवस्था और उत्पादन की व्यवस्था में बाहर से मामूली बदलाव चीजों को सही करने के लिये जरुरी है।

चौथा, अक्सर सहजता के साथ यह मान लिया जाता है कि प्रकृति की सभी चीजें बदलने लायक हैं जैसा कि वर्षावन का उपयोग के लिये दोहन के कारण हुई क्षति को क्षतिश्र्ती के तहत वनीकरण करके संतुलित किया जा सकता है। नदियों को उनके प्राकृतिक बहाव से मोडकर किसी अन्य स्थान पर बराबर या ज्यादा मात्रा मे क्षतिपूर्ती हो सकती हैं। पांचवा, सांस्कृतिक और समुदाय के नुकसान को विकास और पर्यावरण की सोच में महत्व नही दिया गया हैं; जैसाकि वर्तमान भूमि अधिग्रहण बिल बताता है। जहाँ भी लोगों का विस्थापन हुआ है उनकों ''हर्जाना'' दिया गया है। राज्य की नीतियों में उचित परिस्थितकीय से जुड़े सम्मानित जीवन के उद्देशों से मेल नही खाती हैं, परिस्थितकीय से जुड़े पहलू में सामाजिक परिस्थितकीय को अहिंसात्मक माना गया है। एक परिस्थितकीय से जुड़े एक लक्ष्य में, जैसा कि यहॉ उपयोग हुआ है ''बिलुप्त'' प्रजातियों या संस्कृति के निर्माण के लिये कोई स्थान नही है। छठा पर्यावरणीय सोच बेमानी हो जाती है, जब व्यवस्था को आधुनिक तरीकों से व्यवस्थित तकनीकी ज्ञान से संचालित किया जाता है। यह प्रत्येक दिन के व्यवहारिक ज्ञान जिसका उपयोग करते हुये आज भी ग्रामीण समुदाय रह रहा है, उसके प्रति अशांत, मूर्खता ओर घमंडी व्यवहार दिखाता है। परन्तु इसी प्रकार का व्यवहारिक ज्ञान अंदमान के जारंवा आदिवासियों को सुनामी में जीवन सुरक्षित रखना सिखाता हैं। जिसमें जानवरों को उँचाई वाले स्थान पर ले जाना शामिल है। और अंतमे एक पर्यावरणीय सोच में प्राकृतिक विश्व के सभ्य विचार के प्रति संवेदनशीलता नही है। भारत में यह अनदेखी घातक है क्योकि जंगल भारत की परंपरा (तपोवन) से जुड़े है। वर्तमान के आधुनिक पर्यावरणीय सोच में सभी चीजों को भारतीय राज्य के संदर्भ में देखती है जिसका लक्ष्य तकनीकी विशेषज्ञों सशक्त किया है कि वो प्राकृतिक पर्यावरण को राष्ट्रीय लक्ष्य से जोड़कर रखे।

इन सभी के विपरीत, एक परिस्थितकीय सोच अपने में पूर्ण हैं जिसमें चीजों को समेकित रुप में देखा जाता है। इसमें सभी जीवित जीव और सभी आवास एक दूसरे पर निर्भर है, मानवीय गरिमा को बनाये रखना शामिल है और उपभोक्ता के रूप में चीजो के उपयोग को नकारा गया है। इसमें ज्ञान, तकनीक और प्राकृतिक विश्व के प्रति सभ्य सोच को बनाये रखा गया है, और देश–राज्य के वर्तमान महत्त्वाकांक्षी भौतिकवादी लक्ष्यों के प्रति समर्पण को लेकर अनिच्छा है।

लेखक: असीम श्रीवास्तव (maybeassem@gmail.com), आप लेखक और परिस्थितकीय अर्थशास्त्री है। आपने अशीष कोठारी के साथ मिलकर :एक किताब Churning the Earth! The Making of Global India (Penguin Viking, New Delhi, 2012) लिखी है । आपने विकास और वैश्वीकरण से जुड़े परिस्थितकीय मुद्दोंपर विस्तार से लिखा और विचार दियें है ।

पीक ऑयल : हमारा संसार क्यो पलट गया

हम जिस समय मे रह रहे है उसे औद्योगिक युग कहा जाता है और जिसकी कोई तुलना नही है । यह युग शानदार खोजो; निर्माण और उपलब्धियों से भरा है और हम सहजता के साथ स्वीकर करते है कि यह हमारे लिये फायदेमंद है। इसका एक आयाम शास्वत आर्थिक विकास है जिसमें हमारे जीवन का हर पहलू बडा, अच्छा और तेज होगा। १७५० में औद्योगिक युग की शुरूआत के समय से २६० वर्षो में इसने ठीक ऐसा ही किया है। यह हमारे उस चाहत से जुड़ा है जिसमें हम नही चाहते है कि ज्यादा, और प्रचुर के युग का अंत हो।

इस सच्चाई को बहुत कम लोग ही समझतें है कि औद्योगिक युग और इसमें तीव्र आर्थिक विकास सही मायनों में तब शुरू हुआ जब हमने सीखा कि कैसे ५०० लाख सालों से इक्कठा जीवाश्म ईंधन मुख्यरूप से तेल का दोहन कर सकते है। हमारे आधुनिक जीवन की यह शानदार अवधारणा या हकीकत है कि हम इस सस्ते उर्जा से जुड़े पहलुओं को नजर अंदाज कर रहे है जबकि इसके कुल भंडारण का आधा हमने उपयोग भी कर लिया है।

भूर्गभ का एक पहलू यह है कि वैश्विक तेल भंडार का आधा खत्म होना एक वास्तविक खतरा है। ऐसा इसलिये है कि जिस गति से हम तेल को जमीन से बाहर निकाल रहे है वो एक बेल कर्व (चित्र) को बताता है जिसें नीचें दिखाया गया है।

बेल कर्व

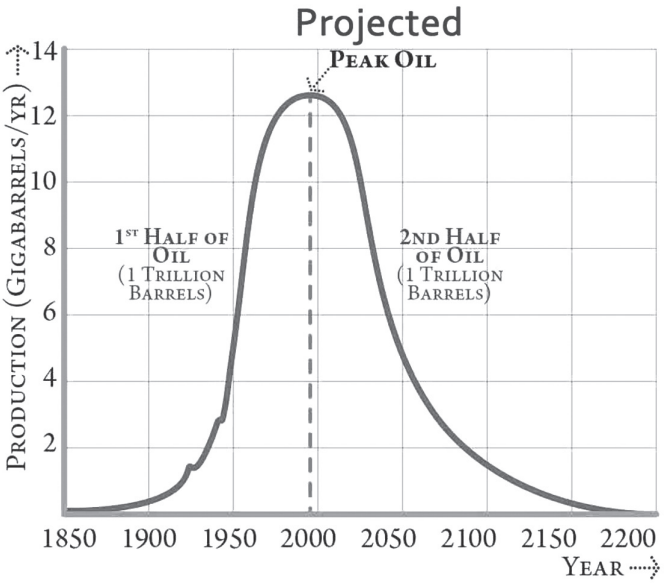

चित्र में यह बताया गया है कि पहले दौर या भाग में तेजी से तेल कि भंडारों को प्राप्त किया है जो कि अपने उच्चतम स्तर (पीक) को बताता है। जबकि यह स्थिती कुल तेल के भंडारों में से आधे भंडारों के समाप्त हो जाने की ओर इशारा करती है। इसके बाद की स्थिती बताती है कि तेल प्राप्त करने की गति धीमी होती जाती है। यह स्थिति भू–गर्भ से जुड़ी वास्तविकता है जिसकी खोज और पुष्टि शेल तेल कंपनी में काम करने वाले भू–गर्भ शास्त्री किंग हुबर्ट ने की थी। किंग के भविष्यवाणी के अनुसार वर्तमान समय में हम तेल के उपयोग को लेकर शिखर पर है जो अधिकतम दर है और यह मायने नही रखता है कि हमारी विकास आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ने के लिये कितने और ज्यादा तेल की जरूरत पड़ेगी लेकिन भू–गर्भ के आधार पर यह संभव नही है। यहॉ इससे यहभी स्पष्ट नही है कि हमारे सामने विश्व की अर्थव्यवस्थाओं की असफलतायें क्यों है? इनकी असफलता के पीछे सतत विकास की चाहत पर आधारित थी। इनकी असफलता तभी संभव है जब हम जमीन से ज्यादा से ज्यादा तेल बाहर निकाले। लेकिन २००५ पीक ऑयल (उच्चतम स्तर) आने से संभव नही है। इसलिये, हमे यह स्वीकार करना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था स्थायी तौर पर असफल होनेवाली है। अत: यह जरूरी हो गया है कि हम सतत विकास के प्रति अपनी आस्था को बदले और हम अपने आर्थिक अवधारणा को इससें जुड़ी वर्तमान की वास्तविकताओं के आधार पर एक बार फिर से परिभाषित करे। सही मायनों में सभी गलतियों को ठीक करने की जरुरत है। हमारे सामने वनो में आ रही कमी, मिट्टी क्षरण, प्रजातियों के विलुप्त होने का संकट, सूखती नदियां, गिरता जल स्तर और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दें है। पीक ऑयल, उर्जा की सीमा का सूचक है। जिसका हमे सम्मान करना होगा और इससे सीखना होगा। यह एक वास्तविकता है जिससें समझौता नही किया जा सकता है। अत:यह जरुरी है कि हम वास्तविकता का सामना करे इसके पहले कि सच्चाई हमारा सामना करे।

लेखक: मंसूर एच खान (acreswildfarm@gmail.com) आपने कंप्यूटर विज्ञान विषय पर अध्यन कार्नेल और एम.आइ.टी. से किया है। आपने चार फीचर फिल्मो का निर्माण किया जिनमें कयामत से कयामत और जो जीता वही सिकंदर शामिल है। अभी आप नीलगिरी में एक आर्गेनिक फार्म में रह रहे हैं।

एक ग्रीन अर्थव्यवस्था

ग्रीन अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यव्स्था है जिसमें मानवीय जीवन स्तर में विकास के साथ सामाजिक न्याय मिले और पर्यावरणीय जोखिम कम हो तथा परिस्थितकीय को होने वाले नुकसान भी कम हो। वर्तमान में मानवता के सामने चुनौती है कि आर्थिक विकास परिस्थितकीय सीमाओं के अंदर हो। लंबे समय तक रहने वाले स्थायित्व को पाने के लिये यह जरुरी है कि मानवता पूरी तरह से अपनी प्राकृतिक सीमाओं में रहते हुयें इसका सम्मान करे। आदर्श स्थिती या समृद्धि को तय करने के लिये ऐसी अर्थव्यवस्था को निर्धारित करना लक्ष्य होना चाहियें जिसमें आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिले और आर्थिक उपलब्धियां सार्थक और उचित हो। परिस्थितकीय और समृद्धि के बीच गहरा संबंध हैं, और समृद्धि ऐसी स्थिती की कल्पना से जुडा हैं जिसमें परस्पर आपस में जिम्मेंदारी और आभार जैसे मूल्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ऐसी आर्थिक गतिविधि जिसमें परिस्थितकीय की अनदेखी की गयी हो उससे मिलने वाली समृद्धि स्थायी नही होगी। परिस्थितकीय समस्या का मुख्य कारण उपभोग का उचित नही होना है जो आर्थिक अस्थिरता की ओर ले जाता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण पडने वाले प्रभावो को पूरी तरह से निर्धारित नही किया जा सका है लेकिन इससे पडने वाले प्रभावों की कीमत चुकाने की चुनौती समाज के सामने है। यदि जलवायु परिवर्तन की दिशा में जरुरी प्रयास नही किये गये तो इससे हमारे सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी. पी) में ५ से २० प्रतिशत की कमी प्रतिवर्ष आयेगी। लेकिन, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना आसान काम नही है। अंतर्राष्ट्रीय उर्जा संस्थान (आई.ई.ए) के अनुसार अभी से लेकर २०३० के बीच ११ ट्रिलियन यू.यस.डालर की आवश्यकता जीवाश्म इंधन को छोडने के लिये पडेगी (आई.ई.ए २००९) प्रचालित या सामान्य सिद्धांत के अनुसार बाहरी कीमतों जैसे पर्यावरणीय और सामाजिक कीमतों को उत्पाद की बाजार मूल्य मे जोड़कर शायद जलवायु परिवर्तन का समाधान किया जा सकता है। इससे उपभोक्ताओं और निवेंशको तक उत्पाद की सही कीमत का संदेश जायेगा। जिससे वो अन्य विकल्पों में निवेंश के बारे में सोचेगे। लेकिन पिछले दो दशकों से ज्यादा समय सें इस विचार को प्रभावी तरीके से लागू करना कठिनाईयों वाला रहा है। इसलिये, कई परिस्थितकीय अर्थशास्त्रियों का विचार रहा है कि संसाधनों की कमी और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों का एक साथ समाधान के लिये आवश्यक है जिससें कि बड़े और छोटे आर्थिक पहल किये जायें। इसी दिशा में संमभावनाओं को तलाशने के लिये समुदायिक स्तर पर ग्रीन अर्थव्यवस्था की संमभावना को समझने का प्रयास जैक्सन और विक्टर (२०१३) ने किया है। इस लेख में विकेन्द्रीकृत श्रम आधारित एक उद्योग की जांच या परिक्षण जैक्सन और विक्टर द्वारा ग्रीन उद्योग अर्थव्यवस्था

के निर्धारित मानको पर की गयी है। इसके लिये भारत पर समुदाय के स्तर पर कपडा उत्पादन से जुड़े खादी उद्योग को लिया गया है।

ग्रीन उद्योग के मापदंड

किसी उद्योग को ग्रीन आर्थिक उद्योग केवल संसाधनों के उपयोग और तकनीक के आधार पर नही माना जा सकता है। इसके लिये उद्योग के सामाजिक, राजनैतिक पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक आयाम भी होना जरुरी है। एक ग्रीन आर्थिक उद्योग के लिये आवश्यक है कि वह भागीदारी (सामाजिक न्याय) और स्थायी (परिस्थितकीय स्थायित्व) समृद्धि पर आधारित हो । यह केवल उत्पादों और सेवाओं को देनेवाली नही हो बल्कि यह सामाजिक और पर्यावरण की समृद्धि को बढायें और बनाये रखे। इसे लोगों और समुदाय को विकास करने में सफलता को तय करने के लिये बाजारों में स्थायित्व, रोजगार सुरक्षा, परिस्थितकीय सत्यता, पूर्ती की श्रृंखला में स्थायित्व को भी तय करना होगा।

स्रोत: यह नोट सुमनास कौलगी (k.sumanas@yahoo.in) के लेख "khadi Production in India - Away-forward to green Economy का हिस्सा है। आप स्वतंत्र शोधार्थी हे और कॉटन पर काम कर रही है। इस पूरे लेख को http://www.epw.in/Commentary/Khadi-production-media.html पर देखा जा सकता हे।

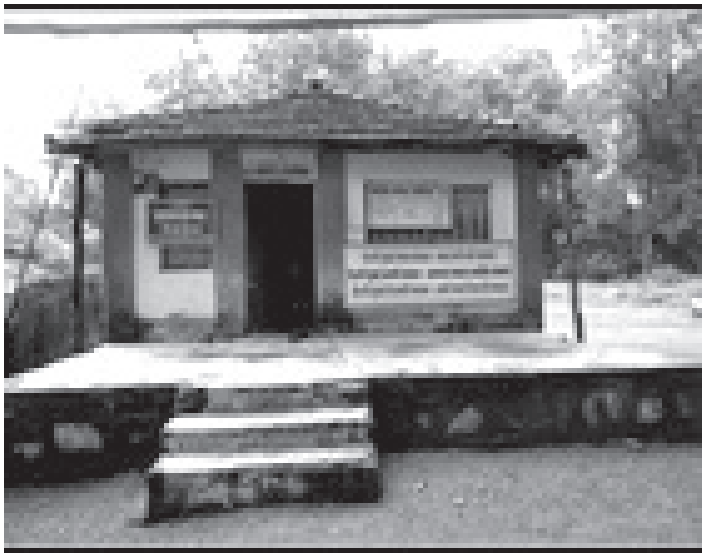

आहार पर विचार

खाद्य संप्रभुता की शुरुआत भोजन को उत्पादित करने वालों के अधिकारों की सुरक्षा तय.करने से होती है। जिसमें, अदिवासी, दलित, किसान, चरवाहें, मछुआरें और विशेषतौर पर महिलायें शामिल है जो अपनी भूमि, क्षेत्र, पानी, जंगल, बीजों, घरेंलू मवेशियों की नस्लो जैवविविधता, स्थानीय बाजारो और जिस ज्ञान को समुदाय मिलकर विकसित किया है और पिढियों से चला आ रहा है, उनका उपयोग और मालिकाना हक बड़े ही प्रजातंत्रिक तरीके से संजोय हुये हैं। हम लोग भोजन से जुडी नीतियों के केंद्र मे है क्योकि हमारा संबंध भोजन के उत्पादन, वितरण और उपयोग से जुड़े है इसके बाद भी नीतियां व्यवसायिक प्रतिष्ठानों और वैश्विक बाजार से निर्धारित, तय और नियंत्रित की जाती है। भोजन हमारे उस राजनैतिक इच्छा से जुड़ा है कि भोजन को कृषि परिस्थितकीय के अनुरुप उत्पादित किया जाये और विविधता पूर्ण, स्थानीय संस्कृति से जुड़े और सुरक्षित भोजन का उपयोग हमारे समुदायों मे हो। यह खाद्य संप्रभुता हमारें विविधता वाले भोजन संस्कृति जिसमें मोटे अनाज या मांसाहार के विनाश के प्रति विरोध भी शामिल हैं से जुडी हुई है। एक प्रकार के भोजन की संस्कृति को उद्योगों या फासीवादी रुढवादी व्यवस्थाओं द्वारा उपल्ब्ध कराया जा रहा है। खाद्य संप्रभुता हमारी घनी, विविधता वाली खाद्य संस्कृति, बचत बीजों के आदान प्रदान, परंपरिक जानवरों से खेतों को जोतना, मिट्टी की उत्पदकता बढाने के लिये जानवरों की खाद,यूरिन और कई दूसरी देशी तरीकों से भी जुड़ी हुई है।

यह उस औद्योगिक कृषि व्यवस्था के विरोध को बताता है जो हमारे भूमि को लेकर हमे गुलाम बनाने को तैयार है और हमे बाध्य कर रहे है कि हम हमेशा के लिये उन पर निर्भर हो जाये साथ में उनके उत्पादों, बींज, खाद, कीट नाशक, ट्रैक्टरों, हार्वेस्टर, खरपतवार नाशक और प्रसंस्कृत डिब्बाबंद भोजन के उपभोक्ता बन कर रह जाये। इससे हम ऐसी स्थिती में पहुँचेगे जिसमें हम उनकी लालच और बाजार के लिये उत्पादन और उपभोग करेगे न कि अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये। हम ऐसे उधार के जाल में फस जायेंगे जिससे निकलने के प्रयास में ज्यादा से ज्यादा बस्तुओं का उत्पादन और उपभोग करेगे। यह औद्योगिक उत्पादन व्यवस्था जिसके पक्ष में हम है उससे हमारी पृथ्वी, हवा, पानी, मिट्टी, बीज, जानवर, कीट, पक्षी, ज्ञान, संस्कृति, गीत, नृत्य कहानियाँ, कला और कलाकृति बांटने की स्वयं में पूर्ण व्यवस्था, सहयोग की भावना, समुदायिक अदान–प्रदान और हमारे स्वास्थ पर बुरा प्रभाव पडेगा। इस व्यवस्था ने कृषि और आहार व्यवस्था में महिलाओं की निर्णय कर्ता की भूमिका से अलग करते हुये पुरुष प्रधान हिसात्मक व्यवस्था को बढाया है और साथ में लिंगभेद को भी बढाया है। बिडंबना यह है कि जिन भूमियों पर पहले विविधता

वाली परिस्थितकीय रुप से उन्नत फसलें होती थी वे भूमियां एक प्रकार की हानिकार फसलों के क्षेत्र में बदल गयी है जैसे धान, बाजरा का उत्पादन औद्योगिक मुर्गी पालन के लिये हो रहा है और कॉफी, आम, काजू, यूकेलिप्टिस, रबर प्लानटेशन काँटन, मिर्च, सब्जी, फल और गन्ना के उत्पादन वाली भूमियों में बदल गयी है। हम इन चीजों को उद्योगों को बेंच कर उनसें ही भोजन खरीदतें है जो भोजन के बाजार और कृषि का नियंत्रण करते है। १९९० में आयी राज्य की नयी उदारवादी[२] आर्थिक नीतियों से इस देश के लोगों को खिलाने वाले छोटे किसान सुनियोजित तरिकों से मुख्य भूमिका से हट गये है और इस माहौल ने उद्योगों को भोजन के व्यवसाय को नियंत्रित करने या हड़पने के लिये अवसर दिया है। यह पूंजीवादी पुरुष प्रधान औद्योगिक आहार और कृषि व्यवस्था जो वैश्विक पूंजी और सरकारों से जुड़ी है विश्व भर में लोगों के जीवन और जीविका के साथ पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा रही है। इसके अलावा भुखमरी, हिंसा और असमानता को बढा रही है जो कि उर्जा और पर्यावरण की समस्या का मुख्य कारण है।

हमारें लिये अब यह समय आ गया है कि हम इस लूट मार को रोके और बंधक बनने का विरोध करते हुयें समुदायिक संसाधनों को वापस ले क्योकि ऐसा करना खाद्य संप्रभुता के लक्ष्य के प्रति समर्पण है। इसके लिये जरुरत है एक राजनैतिक सोच की और उसपर काम करने की योजना की जो औद्योगिक नियंत्रण से अहार व्यवस्था को मुक्त कर अपनी खाद्य (अहार) व्यवस्था में वापस ला दे। खाद्य संप्रभुता सार्थक विश्व को बनाने से जुड़ा है और अंतर्राष्ट्रीय अंदोलन कैपसिना के शब्दों में जिसने खाद्य संप्रभुता शब्द को दिया हैं। खाद्य संप्रभुता नये सामाजिक संबंधों से है जिसमें–पुरुष स्त्री के बीच, लोगों, समुदायों, समुदायिक वर्गों और पीढियों के बीच अत्याचार और असमानता नही हो। यह हमारी मातृभूमी के अधिकारों की रक्षा और आगे आनेवाली पीढी के अधिकारों की रक्षा से जुड़ा है।

लेखक: सागरी आर रामादास (sagari.ramdas@gmail.com), सागरी राम दास एक पशु वैज्ञानिक हैं और आप भारत के खाद्य संप्रभुता समूह की सदस्य है। वेबसाइट ://foodsovereigntyalliance[3].wordpress.com/

✦✦

२. सभी राजनैतिक दलों की सरकारें शामिल है।

३. खाद्य संप्रभुता समूह सम्स्या की प्रतिक्रिया के तौर पर आया और जिसमे आदिवसियों,दलितों,चरवाहें और किसानों के सामाजिक आंदोलनों के साथ सहउत्पादकों को एक मंच पर लाया। यह खाद्य संप्रभुता के साझा लक्ष्य के लिये समर्थन बनाने में और भोजन के अधिकार के साथ मातृभुमी के अधिकारों की रक्षा के लिये काम कर रही है।

३. संगम

विकल्प संगम

विकल्प संगम ऐसा मंच है जिसमें वर्तमान के बाधाकरी और शोषक व्यवस्थाओं की समीक्षा या आलोचना से अलग उन विकल्पों पर ध्यान देना है जो इन व्यवस्थाओं को चुनौती दे रहे हैं। इस पहल में किये जा रहे प्रयासो, संगठनों और संबंधित व्यक्तियों का समागत मुख्य आयाम है। इन संगमों का आयोजन विकल्प संगम के प्रमुख समूह में शामिल कई संगठनो द्वारा एक दूसरे के प्रेरणादायक काम को देखने, साझा करने और सींखने और एक–दूसरे से आपस में सहयोग अलग–अलग क्षेत्रों के लिये शामिल है जिससे कि विकल्पों का समग्र कल्पना की ओर बढ़ सके।

विकल्पों पर दूसरे विकल्प संगम का आयोजन री–स्टोर और एकार्ड के साथ मिलकर कल्पवृक्ष ने किया। यह आयोजन २०१५ में १४ से १७ फरवरी के बीच तमिलनाडु के मदुराई शहर के पास सी.ई.यस.सी.आई (सामाजिक सांस्कृतिक परस्पर मिलन केंद्र) में आयोजित किया गया था।

इस संगम में तमिलनाडु के अलग–अलग स्थानों से विभिन्न विषयों पर काम करने वाले समूहों के वैकल्पिक अर्थिक मॉडलों/पहल ने भागीदारी की जिसमें भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन,लिंग से जुड़े मुद्दें, कचरा प्रबंधन, विकलंगता के मुद्दें स्थयी कृषि आदिवासियों के अधिकार आदि विषय शामिल थे। इस संगम को इस प्रकार से तैयार किया गया था कि इसमें भागीदारी करने वालें अपने प्रयासो को लोगों के सामने रखे और उनको नयी संभावनाओं और विचारों को तलाशने का अवसर मिले। इसमें इस तरह कि व्यवस्था भी थी कि आयोजन के दौरान स्थानीय और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं पर विचार–विमार्श हो सके। जिसमें भागीदारी वाली पूँजी व्यवस्था, स्वास्थ की वैकल्पिक व्यव्स्था, शहर नियोजन, कचरा प्रबंधन, वैकल्पिक राजनिति और अहिंसात्मक संचार के विषय शामिल थे। इस संगम में कुछ अन्य मुद्दों जैसे कलंक की राजनीति, विकलंगता और समर्थता के साथ विपरीत लिंग और सेक्स वर्कर के अधिकारों पर भी चर्चा हुई।

संगम के सत्र में कला और अभिव्यक्ति का आयोजन हुआ। जिसमें लोगों ने रचनात्मक अवसर को नृत्य, संगीत, नाटक, पेंटिंग और मिट्टी के प्रतिमान प्रस्तुत कर मनाया और फोटो प्रदर्शिनी के साथ संगठनो के स्टाल ने इस सत्र को उत्सव का रंग दे दिया।

संगम के दौरान ही वैकल्पिक कल्पना के लिये वैचारिक संरचना पर दस्तावेज/नोट पर विचार–विमर्श और रचनात्मक सलाहों पर चर्चा की गयी। संगम को आगे बढाने के लिये विचार किया गया कि क्षेत्रिय संगठन इस प्रक्रिया को आगें लेकर जायेगे और तमिलनाडु के अंदर स्थानीय और विषय विशेष पर संगमों को आयोजित किया जायेगा।

लेखक: राशी मिश्रा (rashi.mish@gmail.com) आप कल्पवृक्ष की सदस्य है और आप संगम प्रक्रियां पर काम करने के साथ आप सभी के लिये स्वस्थ भोजन अभियान से भी जुड़ी हुई है ।

अंतिवादी परिस्थितकीय लोकतंत्र के सिद्धांत या सूत्र[४] :

वास्तविक और वैचारिक विकल्प मे बहुत बडा अंतर होता है। किसी भी विकल्प को उसके मूल स्थान से दूसरे स्थान पर वहां कि स्थानीय परिस्थितियों और विविधताओं के कारण प्रतिचित्रण या उपयोग नही किया जा सकता है। लेकिन, यह संभव हो सकता हैं यदि महत्वपूर्ण लेकिन सामान्य तौर पर प्रचलित सिद्धांतों को जो इन प्रयासों से जुड़े है, उनको स्थापित या तय (निर्धारित) करना संभव हो।

यहाँ पर यह ध्यान रखने की जरुरत है कि नीचें बतायें गये सिद्धांतों के आधार में और कई आधारभूत नैतिक मूल्यों की भूमिका हो सकती हैं जिनमें संवेदना, सहनभूति, ईमानदारी, सहनशीलता, उदारता, देख–भाल आदि शामिल है। इनकों, अधिकतर अध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों द्वारा स्वीकार किया गया है और नीचे बतायें गये सिद्धांतो की व्याख्या करने मे इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

परिस्थितकीय सत्यनिष्ठा और प्रकृति के अधिकार :
परिस्थितकीय प्रक्रियाओं में (विशेंष कर वैश्विक स्वच्छ जल), परिस्थितकीय तंत्रों और जैवविविधता, जो कि पृथ्वी पर जीवन का आधार है। उनके प्रति वास्तविक सम्मान।

प्रकृति और सभी जीवों के उन्नत स्थिती में जीवित रहने और विकास करने का अधिकार के साथ समुदायिक जीवन के प्रति सम्मान और खुशी की भावना का होना।

बराबरी,न्याय और समावेश:– उन सभी परिस्थितियों की बराबर की उपलब्धता जो खुशहाल मानव जीवन के लिये आवश्यक है जिसमें समाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, परिस्थितिकीय और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियां है।, और इसमें वर्तमान और भविष्य की पीढियों में से सभी का समावेंश किसी दूसरे व्यक्ति के अधिकारों/उपलब्धता को खतरे में डाले बिना, मानव और प्रकृति के अन्य तत्वों के बीच समानता और सभी के लिये सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय न्याय विशेषरुप से उनको ध्यान में रखते हुयें शामिल करना जो वर्तमान में शारीरिक/मानसिक/सामाजिक असमर्थता के कारण छूट गये है।

सार्थक भागीदारी का अधिकार और जिम्मेदारी:
समुदाय और नागरिक का उन महत्वपूर्ण निर्णयों में भागीदारी का अधिकार जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं, और उन सभी स्थितियों को उपलब्ध करना जो इस भागीदारी को तय करते हैं और अतिवादी भागीदारी प्रजातांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है। इन अधिकारों के अनुरुप प्रत्येक समुदाय और नागरिक की यह जिम्मेंदारी है कि वह ऐसे सार्थक निर्णय प्रक्रिया को सुनिश्चित करे जो परिस्थितिकीय स्थायित्व और समाजिक–आर्थिक न्याय के द्वि सिद्धांत पर आधारित हो।

विविधता और अनेकता:
पर्यावरणों और विभिन्न परिस्थितिकी, प्रजातियों, जीनो (जंगली और घरेलू) संस्कृतियों, रहने के तरीकों, ज्ञान की व्यवस्थाओं, मूल्यों और शासन व्यवस्थाओं (जिसमें आदिम जन और स्थानीय समुदाय भी शामिल है) से जुड़ी विविधताओं का समावेश या एकीकरण उस स्थिति में जब वे स्थायित्व और बराबरी के सिद्धांत से सामजस्य में हो।

सम्मिलित (एकीकृत) संसाधन और व्यक्तिगत स्वतंत्रीओं का समर्थन:
समाजिक–संस्कृतिक, आर्थिक और परिस्थितिकीय संसाधनों से जुड़ी सम्मिलित और सहयोग पूर्ण सोच के साथ काम करना इस प्रकार के सम्मिलित परिवेंश में सभी के अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं और पसंद (जिसमें अलग होने का अधिकार जैसे लैंगिक अनुकूलन/ चुनाव) और नवीनता का संम्मान करने के साथ आपस में व्यक्तिगत और समुदायिक स्तर पर एकता, सहयोग पूर्ण सबंध और आपस में बांटना एक आधार है ।

लचीलापन और अनुकूलता :
बदलाव की बाहरी और आंतरिक ताकतों के सामनें समुदायों और मानवता के पूरी तरह से प्रतिक्रिया, अपनाने और लचीलेपन की समर्थता परिस्थितिकीय स्थायित्व और बराबरी को बनाये रखने के साथ प्रकृतिक लचीलेपन या अनुकूलता को तय करने वाली स्थितियों के प्रति संम्मान भी शामिल है।

स्वतंत्र (नियंत्रण मुक्त), स्वलंबन (आत्मनिर्भर) और परिस्थितिकीय क्षेत्रवाद :
प्रशासन की प्राथमिक इकाई के तौर पर स्थानीय ग्रामीण और शहरी समुदायों (सभी सदस्यों के निर्णय लेने में हिस्सेदारी के लिये आकार में पर्याप्त सभी सदस्य की भागीदारी हो सकती है।)

४. यह विकल्प संगम प्रक्रियां के तहत चल रहे विचार विमर्श पर तैयार किये गये दस्तावैज का अंश है। आप अपने विचारों और संपर्क के लिये आशीष कोठारी chikikkothari@gmail.com को पर लिखें।

आधारभूत आवश्यकताओं पर स्वलंबन जिसमें स्वास्थ और शिक्षा जो एक दूसरे से जैव और परिस्थितिकी क्षेत्रों के स्तर पर भू–दृश्य, क्षेत्रीय राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों जो प्राथमिक इकाईयों के प्रति जिम्मेदार है; से जुड़ी है। यहाँ पर आत्मनिर्भर का मतलब या आशय जहां तक हो सके आधार भूत आवश्यकताओं के लिये स्वालंबी होना है और पहुंच का अधिकार है जिसे राज्य द्वारा प्रदत्त केन्द्रीकृत व्यवस्थाओं के द्वारा स्थानिय स्तर पर तय या पूरा नही किया जा सकता है।

सहजता और पूर्णत :
जीवन के मूल्य, कि जीवन और जीविका के लिये पर्याप्त होने से संतुष्ट रहना नकि अधिक की लालसा। (अपरिग्रह)

मजदूर और काम की रचनात्मकता और गौरव :
सभी शारीरिक और बौद्धिक श्रम का सम्मान इस भावना से करना कि कोई भी व्यवसाय या काम दुसरे से छोटा या बडा नहीं होता है जिसमें मजदूरों और परिवार/स्त्रीयों के बिना वेतन का काम और हिस्सेदारी/देख–भाल में उनका उचित स्थान किसी भी व्यवसाय को किसी जाति या लिंग विशेष से नही जोड़ना, सभी कामों का सम्मानजनक, सुरक्षित और शोषण मुक्त होना, काम के घंटो में कमी और ज्यादा रचनात्मक जुडाव को तय करते हुये काम और अवकाश (छुट्टी) के बीच बनावटी दोहरे दिखावें को हटाना शामिल है।

अहिंसा, समता और शांति :
दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार जिसमें उनके भौतिक, मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मिक समृध्दि के प्रति सम्मान हो। कोई व्यक्ति जिस तरह से अपना नुकसान नही चाहता ठीक उसी प्रकार से दूसरों को नुकसान नही पहुंचाने की भावना और ऐसी स्थिति को तैयार करना जिसमें लोगों के बीच में समता और शांति हो।

✦✦

४. चिंतन

शांति
अब हम बारह तक गिनते हुये शांत होगे।
एक बार धरा के चेहरे पर चलो कोई भाषा न
बोले चलो क्षण भर के लिये आचल हो
अपनी बाहो को ज्यादा न फैलायें।

यह अनोखा पल होगा, बिना भाग–दौड़, बिना मशीन
इस आकस्मिक अजनबी पन मे हम सब साथ होगे।

मछुआरे ठंड़े सागर की मछलीयों(व्हेल) को न सतायेगे
और नमक एकत्र करने वाले जन अपने जख्मी हाथों को
निहारेगे।

प्रकृति से लड़ने को ऊतावले लोग,
शायद साफ कपडों को धारण कर अपने भाइयों संग
बिना कुछ करते हुये छाया में घूमेंगे।

अगर हम सिर्फ ''जीवन में आगे बड़ने'' भर पर
एकचित्त न होते ।
अगर हम एकचित्त होकर
''कुछ करने'' से मुक्त हो पाते
तो शायद एक महान सुखद खामोशी
हमारि उस गहरी उदासी को तोड़ पाती।
स्वयं व दुसरे के अभेद को
न समझ पाने वालि उदासी
जीतेजी आत्मा का अंत करनेवाली उदासी।
जीवन व मृत्यु के अद्वैत भाव को हम धरा से सीख पाते
जाहाँ सूखी मृत दिखनेवाली जमीन पर,
समय आने पर, असंख्य बीज हैं उभर पाते।

अब मै बारह तक गिनूंगा और
आप शांत बने रहो और मै जाऊंगा।

पंबलो नेरुद्रा

✦✦

५. आशा की किरण

अमृत धारा बिना किसी प्लास्टिक कचरे के स्वच्छ पानी की सहज उपलब्धता

तीन साल पहले, लद्दाख के लेह में स्थित स्वशासी पहाडी विकास संघ (एल.ए.एच. डी.सी.) ने लद्दाख के लिये एक प्रस्ताव दिया कि मिनरल वॉटर बाँटल पर प्रतिबंध लगा दिया जाये ताकि इन बाँटल से पडने वाले नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को कम किया जा सके क्योकि इससे बहुत ज्यादा प्लास्टिक कचरा होता है। इस प्रस्ताव का एक दूसरा पहलू यह भी था कि क्षेत्र के बेरोजगार युवकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होगे जिसमें वे स्वयं ही सुरक्षित और साफ पानी भरने की सुविधा लोगों को देगे। एल.ए.एच.डी.सी.के अच्छे प्रस्ताव के बाद भी इस पर पुन:विचार किया गया क्योकि तब विकल्प आसानी से उपलब्ध नही था। लेकिन अब एल.ए.एच.डी.सी. के पहल के पक्ष में शायद अमृतधारा एक समाधान हो सकता है जिसे अलग–अलग स्तरों पर पूरें देश में विस्तार किया जा सकता है।

दूषित पानी और प्लास्टिक कचरें के भारत पर्यावरण और स्वास्थ में पडने वाले खतरों को पहचानते हुये इसके समाधान के तौर पर अमृतधारा को बनाया गया है। अमृतधारा के सहसंस्थापक मिनहाज अमीन के अनुसार तकनीकी समाधान के तौर पर पानी वेडिंग मशीन जिसमें उपभोक्ता अपनी बोतलों पुन:जल भर सकते है, को बाजार में लाया जा सकता है। जब हम बोतलों की संस्था में कमी कर रहे है तो यह भी हमने पाया कि कीमत में भी कमी लाना होगा और उपभोक्ताओं को उनकी मांग के अनुरुप सब उपलब्ध कराना होगा जैसे साफ पानी, प्रति लीटर कीमत में आधे की कमी, और सभी को सुरक्षित पानी की सहज उपलब्धता।

अमृतधारा पोंडिचेरी शहर में रिफिल स्टेशनों के एक नेटवर्क बनाने पर विचार कर रहा हैं। जिसका आगें चलकर विस्तार पूरे भारत में किया जाये ताकि असानी से हमेशा के लिये पानी की बोतलें खरीदनें की प्रवृत्ति को लोगों द्वारा छोड दिया जायें।

इस उत्तम प्रयास से जुड़े एक अन्य सहसंस्थापक अक्षय रुंगटा है जिन्होनें पानी वेंडिग मशीन को विकसित कर बनाया जो सार्वजनिक स्थानों में दुकानदारों द्वारा उपभोक्ताओं को साफ पानी के लिये रिफिल बॉटलों को बेचने का अवसर देगा। अमीन पहले के अपने अनुभवों को बताते है कि हमे लोगों को सस्ती, सरल और लचीली व्यवस्था देना है। और ऐसी व्यवस्था विकसित करना है जो सामान्य दुकान में फिट हो जायें ताकि उपभोक्ता कही भी रिफिल कर सके और लोगों की सुविधाओं में भी इ़ाफा या बढोत्तरी हो।

अमृतधारा ने संसाधनों के कमी की समस्या के समाधान के बाद यह योजना तैयार कर रहे है कि जल्दी ही पोंडिचेरी में पहल की शुरुआत की जाये। संस्थापकों को विश्वास है कि उनका यह छोटा प्रयास आनेवाले कुछ महिनों में कई अन्य संस्थाओं के लिये आकर्षक होगा जिससें वे लंबे समय के निवेंश के लिये प्रेरित होंगे। भारत में अमृतधारा पानी को लेकर एक नया बदलाव ला सकती है।

अपनी इस पहल को और प्रभावी तरीके से करने और इसके आकार में विस्तार के लिये अमृतधारा एक अंतर्राष्ट्रीय धन निवेंश प्लेटफार्म इंडिगो से धन जुटाने में लगी है। आप लोगों ने अरुविली में एक छोटे आफिस को स्थापित किया हे और जूनियर इंजीनियरों, डिजाइनरों और एक सेल्स मार्केटिंग निर्देशंक को लेकर अपने मानव संसाधन को दुगना किया हे। इसमें अक्षय जो कि सहसंस्थापक है अपने मास्टर अध्यन को छोडकर पूरी तरह जुड़ गये हैं। इसके अलावा भागीदारों को उत्पाद डिजाईन और अगले चरण के इलेक्ट्रानिक्स को विकसित करने के लिये शामिल किया गया है।

पानी वेंडिग मशीन के मॉडल में २० लीटर पानी की टंकी लगी होगी जिसे पुन:भरा जा सकेगा। टेक्निशियन और सहसंस्थापको का दावा है कि मशीन को पेयजत वाले नल से भी जोडा जा सकता है।

लेखक:– टसेवांग रिजित

स्रोत: http://news.statetimes.in/amrutdhara-an-

समुदाय आधारित स्वास्थ सेंवायें

महाराष्ट्र राज्य की समुदायिक स्वास्थ पर शोध संस्थान (एफ.आर. सी.एच.) भारत में ग्रामीण जनसंस्था के लिये नयी स्वास्थ सेंवा कार्यक्रमों को विकसित करने की दिशा में प्रयासरत है। यह स्वयं सेंवी संगठन समुदायिक स्वास्थ कार्यकर्ताओं को जोड़ने और उनके प्रशिक्षण के कार्य में उन गांवों में काम कर रही हैं जहाँ स्वास्थ कार्यकर्ता सीमित है और जो है भी वह क्षेत्र/गॉवों की स्वास्थ आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यस्त है। एफ.आर.सी.एच के अनुभव और अध्ययन

के आधार पर यह निकलकर आया है कि ८५ प्रतिशत स्वास्थ सेवाओं को समुदायिक स्वास्थ कार्यकर्ताओं के द्वारा उपलब्ध कराया जा सकता है। एफ.आर.सी.एच. का प्रशिक्षण स्वास्थ कार्यकर्ताओं के उनके अपने समुदाय को स्वास्थ सेंवाओं को उपलब्ध कराने और ग्रामीण स्वास्थ सेवाओं से जुड़ी व्यवस्थाओं में कुशल भागीदारी को अनुमति देता है।

यह बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है कि ग्रामीण समुदायों को आत्मनिर्भरता की अनुमति हो क्योंकि अभीतक हेल्थ नीतियां और किये गये प्रयासों के बावजूद भी इन क्षेत्रों में गुणात्मक स्वास्थ सेवाओं की कमी हैं। सरकार लगातार शहरी स्वास्थ सेंवाओं में बहुत ज्यादा धन खर्च करती आ रही हैं जबकि ग्रामीण जनसंख्या खुशहाल और स्वस्थ रहने के लिये आधार भूत आवश्यकताओं कभी से गुजर रही है। देश में डॉक्टरों की कमी होने के साथ ग्रामीण अस्पतालों मे सुविधाओं, संसाधनों और आधारभूत ढाँचे की कमी स्वास्थ कर्ताओं को काम करने के लिये शहरी क्षेत्र के चुनाव के लिये बाध्य करती है। ७५ प्रतिशत स्वास्थ सेंवाओं से जुड़ी सुविधायें शहरी क्षेत्रों में हैं। जहाँ केवल २७ प्रतिशत जनसंख्या रहती है। इसके कारण ग्रामीण लोगों को स्वास्थ सेंवाओं के लिये बहुत दूरी तय करना पडता है। संगठन का लक्ष्य प्रति २५० व्यक्तियों पर एक स्वास्थ कार्यकर्ता की उपलब्धता को तय करना है ठीक इसके विपरीत देश मे १७०० व्यक्तियों के लिये एक डॉक्टर उपलब्ध है।

इस प्रयास को अमल में लाने के लिये सबसे पहले स्वास्थ कार्यकर्ताओं का चुनाव करना होता है। इन स्वास्थ कार्यकर्ताओं का चुनाव स्थानीय स्तर पर उस ग्रामीण समुदाय में से किया जाता है जहाँ वे काम करेंगे। चयनित कार्यकर्ताओं में अधिकतर ऐसी महिलायें होती है जिनके बच्चे न हो और यदि है तो वो पर्याप्त उम्र के हो ताकि वे स्वास्थ कार्यकर्ता के रूप में अपनी स्वतंत्रता को बचाये रखे। इससे एक स्तर तक परिवार और समुदाय का स्त्रियों के प्रति सहयोग सुनिश्चित होता है क्योंकि यह उनके एक स्वास्थ कार्यकर्ता के तौर पर सफल होने के लिये महत्वपूर्ण भी है। घर और समाज में पली बढ़ी ये महिलायें पूरी तरह मूल्यों, जीवनशैली और जिस ग्रामीण क्षेत्र में काम करती है वहाँ की मानसिकता को समझती है जिसके कारण समुदाय के लोग इन महिलाओं कि स्वास्थ कार्यकर्ता कि भूमिका में आसानी से विश्वास कर लेते है।

स्वास्थ कार्यकर्ताओं के चुनाव के बाद आता है उनका प्रशिक्षण, जिसके लिये पास का स्वास्थ केंद्र या अस्पताल होता है प्रशिक्षण केंद्र और यहां पर चयनित लोगों को समुदायिक सेवाओं को देने के लिये भेजा जाता है। चयनित लोग एक स्तर तक शिक्षित होते है। अबतक संघटन में अपरंपारिक तरीकों को प्रशिक्षण में शामिल किया है ताकि महिलाओं को प्रभावी प्रशिक्षण उनकी समझ उनकी रूचि के अनुसार दिया जाये। स्वास्थ सेवाओं से जुड़े तकनीकी पहलुओं पर गहन अध्ययन कराया जाता है। प्रशिक्षित करने में संगठन काहानियों पौरानिक कथाओं और उनके संस्कृति से जुड़े भागीदारी के तरीकों को बताया जाता है। विशेष तौर पर स्वास्थ कार्यकर्ताओं को हानिकारक सांस्कृतिक मूल्यों और असमानताओं के बारे में जानकारी दी जाती है ताकि उनकी कार्यकुशलता उनके समुदाय पर विभिन्न सकारात्मक प्रभाव डाले और उनकी समुदायिक स्वास्थ कार्यकर्ता की भूमिका कार्यक्रम के संपूर्ण उद्देश्यों के अनुरूप हो।

वर्तमान व्यवस्था में जहाँ ग्रामीणों को स्वास्थ और कल्याण का पहलू प्रशासनिक व्यवस्था में दूर जान पडता हैं। वही,एफ. आर.सी.एच इस स्थिति को बदल ने के लिये अथक परिश्रम कर रहा है। यह संगठन समुदायिक स्वास्थ कार्यकर्ताओं को तैयार करने के साथ–साथ अन्य समुदायिक आधारित समाधान में सहयोग कर रहा है जिसमें ग्रामीण स्वास्थ समितियों का गठन सभी शामिल गांवों को करना हैं ताकि स्वास्थ और स्वच्छता के प्रति जागरूकता को बढाने पर विचार किया जा सके। और साथ ही संगठन स्वास्थ निगरानी में समुदाय की भागीदारी के महत्व पर भी सहयोग कर रहा है। इन कार्यक्रमों के आने से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ कि उपलब्धता बडे स्तर पर बढ़ी है, यह प्रयास बाधाकारी और केन्द्रीकृत प्रयासों को कम करता है। स्थानीय समुदाय स्वास्थ कार्यकर्ताओं के कारण कार्यकर्ताओं और, मरीज के बीच विश्वास और आपस में समझ विकसित होती है। गाँव के सामान्य लोगों को वैकल्पिक स्वास्थ सुरक्षा व्यवस्था से जोड़ने से लोगों को यह अवसर मिला है कि वो अपनी इच्छा के अनुरूप स्वास्थ सेवांओ के प्रकार और गुणवत्ता को चुने। समाधान के तौर पर इन समुदायों में आत्मनिर्भता की अनुभूति का सशक्तिकरण है और साथ ही एक प्रजातांत्रिक, विकेन्द्रीकृत और समुदाय द्वारा संचालित स्वास्थ मॉडल का निर्माण करना है।

लेखक : सारह चैपल (sschpell@gmail.com), आप ने कल्पवृक्ष में प्रशिक्षु के तौर पर काम किया है। आप अमेरिका क्लास २०१५ की विद्यर्थी है और इंटरनेशनल स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल सर्विस से जुड़ी है।

शहरों में साइकल

अधिकतर विकासशील शहरी क्षेत्रों में जो भी आधारभूत ढॉचा विकसित होता है वह कारों को ध्यान में रखकर होता है न कि लोगों को ध्यान में रखकर। अक्सर पैदल चलने और साइकल के उपयोग की अनदेखी की जाती हैं क्योकि मुनसिपल (नगरनिगम) योजनाकार नयी सडकों,हाइवें और पार्किंग के स्थानों पर काम करते हैं जो केवल व्यक्तिगत वाहनों के उपयोग को बढावा देता है और इनकी संख्या को बढाता है। इनका उपयोग शहरी नियमित आने जाने वाले और यात्री करते हैं। बिना मोटर वाले आवागमन के साधनों पर ध्यान नही

दिया जाता हैं जबकि इसके कई महत्वपूर्ण आर्थिक,सामाजिक और पर्यावरणीय फायदे है। इससे शहरी लोगों के जीवन की गुणवत्ता भी बढती है। इससे मिलने वाले फायदों में वायु प्रदूषण में कमी, कार्बन उत्सर्जन में कमी, आवागमन के सस्ते विकल्प, रोजाना शरीरिक व्यायाम के तरीकों में बढोत्तरी और समुदायों के बीच आपस में ज्यादा से ज्यादा जुड़ाव है।

कोलंबिया के बगोटा शहर की लोगों की आवागमन की व्यवस्था आदर्श है। पिछलें कुछ दशकों में शहर में नये पैदल और साइकल से जुड़े ढाँचे को विकसित किया गया हे। कई उदाहरणों में से कुछ उदाहरण नीचे बतायें गये है।

- पैदल चलने और साइकल के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिये फुटपाथों को चौडा किया गया और लगभग ३०० किमी. के साइकल रास्ते को सडक मार्ग से जोड़ा गया है। इन आवागमन के साधनों को मनोरंजन के तरीकों को अलग ध्यान में रखकर किया गया है।
- शहर के व्यवसायिक क्षेत्र में पैदल चलने के स्थान के अलावा किनारें चलने के स्थान को लाया गया जो कारों की पार्किंग के साथ साथ पैदल और साइकल के रास्ते में पडने वाली रुकावटों को भी रोकता है ।
- विश्व की मशहूर ट्रांसमिलानो एक तीव्र बस ट्रांसपोर्ट व्यवस्था (बी.आर.टी) है जो तीव्र, अधिक प्रभावी और लोगों के आवागमन को निर्धारित करती है और जो शहरों की सभी योजनाओं और विकास के केंद्र में है।

बगोटा के सामाजिक आर्थिक परिवेंश और इन नीतियों के अमल में लाने से शहर में रहने वाले केवल २० प्रतिशत लोग व्यक्तिगत वाहन का उपयोग कार्यक्षेत्र के लिये प्राथमिक आवगमन के साधन के रुप में करते हैं।

सडको पर साइकल के उपयोग और सामाजिक न्याय को बढावा या प्रोत्साहित करने के लिये सिस्लोवया (एक कार्यक्रम) का आयोजन किया जाता है। इसके लिये १०० किमी.की सडक को वाहनों के लिये बंद कर दिया जाता हैं ताकि इस कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले २ मिलियन लोग इस रास्ते का उपयोग पैदल चलने, साइकल चलाने, शेलर ब्लेडर और दौड़ने के लिये कर सके। विश्व के २०० से ज्यादा शहरों ने सिस्लोवया को सार्वजनिक स्थानो में समानता को बढाने के माध्यम के रुप में देखा जाता है। इन शहरों में जकर्ता,लागोस,ब्रुसेल्स मैक्सिको सिटी और अहमदाबाद शामिल है। साइकल के उपयोग को बढावा देने वाले वैश्विक संगठन का विस्तार तेजी से लगातार बढ रहा है।

यदि शहरी संरचना में साइकल का उपयोग, पैदल चलना और जन आवागमन के साधन इतने फायदे मंद है तो नीतियों को इसके अनुरुप क्यो नही बनाया जाता हैं? कई औद्योगिक शहरों और विकसित देशों से एक बुराई जुड़ी हुई है कि वे बिना मोटर युक्त आवागमन के साधनों को गरीब से जोडकर देखते है। विश्व के अधिकतर शहरों में पिछले कई दशकों में विकास व्यक्तिगत वाहनों जैसे कार, और दो पहिया वाहनों को ध्यान में रखकर किया जाता रहा है, जिससें बिना मोटर वाले वाहनों को नुकसान पहुंचा है। शहरी क्षेत्रों में प्रशासन भी उनके पक्ष में हैं जो मोटर वाले वाहनों का उपयोग करते है। इससे उन लोगों का सामाजिक बहिष्कार है जो सकरी गलियों ने असुरक्षित होकर टहलते या साइकल चलाते है।

जन आवागमन के साधन सामाजिक न्याय या समानता का माध्यम उनलोगों के लिये हो सकता है जो व्यक्तिगत वाहनों का उपयोग नही करते है। शहरी समाज को ध्यान में लाने पर यह सामने आता है कि शहर का कमजोर वर्ग भी सुरक्षित, भरोसेमंद, और सस्ते आवागमन के साधनों का उपयोग अपने व्यवसायिक व्यक्तिगत और मनोरंजन के लिये अधिकार की पात्रता रखता है। अधिकार विहीन लोग जैसें बच्चे और बुजुर्ग जो कानूनी तौर पर कार और दो पहिया वाहनों का उपयोग नहीं कर सकते उनकी छोटी दूरी की यात्राओं में पैदल चलना और साइकल चलाना उनके आवागमन को बढा सकता है।

शहर में रहने वाली सभी सामाजिक–आर्थिक वर्ग के लोग साइकल और जन आवागमन के साधनों का उपगोग करेंगे यदि इसके लिये सुविधाओं को उचित रूप में उपलब्ध कराया जायें। भारत के संदर्भ में यह विशेष तौर पर सचाई है क्योंकि यहा लोगों का एक बहुत बडा वर्ग पहले से ही साइकल का उपयोग नियमित करता आ रहा है। भारत में साइकल के उपयोग का आंकडा अलग–अलग हैं एक ओर जहाँ बडे शहरों में ७ से १५ प्रतिशत लोग इसका उपयोग करते हैं वही माध्यम और छोटे शहरों में १३ से २१ प्रतिशत लोग इसका उपयोग कर रहे है। यह आंकडा इसके बाद भी है जब वर्तमान साइकल से जुड़े ढाँचे में कई असुविधायें है। इसके अलावा अधिकतर लोग नियमित रुप से ५ किमी. से कम घर से दूर जाते है। साइकल के उपयोग को यथार्थ, सस्ता और पर्यावरण के पक्ष में उत्तम आवागमन के साधन बनाने के लिये जरुरी है कि इसको उपयोग करने वाले लोगों से जुड़े आधारभूत ढांचे को तय करके स्थापित किया जाये। यदि स्थानीय नगरीय सरकारें अपने नागरिकों के साथ मिलकर काम करे तो नीतियां प्रभावी इन मायनों में हो सकती है कि इसमें समस्या और समाधान को प्राथमिकता मिले और यह लोगों के स्थानीय समझ या ज्ञान के आधार पर हो । इसके अलावा नीतियों के लिये लोगों का समर्थन बढेगा। यदि पूरे विश्व के शहरों के अधिकारी अपने शहर के लोगों पर ध्यान देने लगे तो शायद उनकों यह आभास होगा कि शहर के लोगों के अच्छे जीवन और शहर के जन आवागमन के साधनों का समन्वय होना जरुरी है।

लेखक: सारह चैपल (sschpell@gmail.com) आप मे कल्पवृक्ष में प्रशिक्षु के तौर पर काम किया है। आप अमेरिका क्लास २०१५ की विद्यार्थी है और इंटरनेश्नल स्टडीज, स्कूल ऑफ इंटरनेश्नल सर्विस से जुड़ी है।

कल्पना

कल्पना करो कि कोई जन्नत नही है
यह तुम्हारे लिये सरल है, यदि प्रयास करो
हमारे नीचे कोई नर्क नही है
हमारे ऊपर गगन केवल है
कल्पना करो कि कोई देश नही है
कठिन नही है ऐसा करना
मरने और मारने के लिये कुछ नही है
और कोई धर्म नही है
सभी लोग शांति से जी रहे है कल्पना करो
आप कह सकते है मै स्वप्नशील हूँ
लेकिन मै अकेला नही
आशा है तुम हममे से एक होगे एक दिन
कोई संपत्ति नही कल्पना करो
मुझे अचरज है कि यदि ऐसा कर सको
लोभ और भूख की कोई जरुरत नही
ये भाई चारा
कल्पना करो सभीलोग पूरे जहां को आपस में बाँटे है,
तुम कह सकते हो कि मै स्वप्नशील हूँ
लेकिन मै अकेला नही हूँ
आशा है एक दिन तुम भी हममें से एक होगे
और पूरा जहां एक होगा

जॉन लेनन

साइक्लोनोमिआ:– एक सहभागी और उत्सव के माहौल वाली साइकल मरम्मत पर कार्यशाला

साइक्लोनोमिआ अपने आप करो के लक्ष्य पर आधारित साइकल की कार्यशाला हैं जो बुडापोस्ट मे एक डिग्रोथ और ट्रांजिसन सेंटर खोलने के बडे प्रोजेक्ट का हिस्सा हैं। यह प्रोजेक्ट सार्थक विकल्पों और स्थानों पर आधारित होने के साथ विभिन्न क्षेत्रों के नौजवान शोधकर्ताओं की साझा पहल है। इसका उद्देश्य उस परिवर्तन की स्थिती पर प्रयोग करना है जो ज्यादा स्वायत्ता की ओर ले जाता है।

साइक्लोनोमिआ स्वयं के प्रबंधन पर आधारित और डिग्रोथ, परिवर्तन, और अपने आप करने की भावना से प्रेरित कार्यशाला हैं जिसमें प्रत्येक सदस्य अपने आप अपनी साइकल की मरम्मत कर सकता है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य, साइकल चलाने,इसके औजारों के उपयोग की स्वायत्ता और साइकल बनाने, पुन:उपयोग करने के लिये और मरम्मत से जुड़ी समझ और जानकारी को लोगों तक पहुंचाना हैं जो कि अपने आप करने के सिद्धांत के अनुरुप हो। इसके साथ लोगों का आपस में मिलकर अच्छा समय व्यतीत करना भी इस कार्यशाला का उद्देश्य है।

साइक्लोनोमिआ मंगलवार और गुरुवार को शाम ३ से ८ बजे तक और शनिवार को ११ बजें सुबह से ६ बजें शाम तक खुला रहता है। कार्यशाला में साइकल के मरम्मत से जुड़े सभी प्रकारों को औजारों को उपलब्ध कराया जाता है। इसमें कम से कम एक विशेषज्ञ हमेशा अपने सदस्यों की सहायता और सलाह देने के लिये उपलब्ध रहता हैं। १५ जून २०१३ में बुडापेस्ट में साइक्लोनोमिआ की शुरुआत हुई थी। इसकी शुरुआत से लेकर अबतक साइकल का उपयोग करने वाले २०० लोगों ने इस कार्यशाला के संचालन में भागीदारी की हैं जिसके लिये इन लोगों ने वर्कशॉप (कार्यशाला) में अपनी साइकलों की मरम्मत की है। साइक्लोनोमिआ को कुछ साइकल से जुड़े जागरुकता कार्यक्रमों मे बुलाया जा चुका है जिसमें सेंट्रल यूरोपियन यूनिवर्सिटी, बुडापेस्ट के इरोखोस लोरैंड यूनिवर्सिटी का कोलिजिअम, मैगनेट हंगेरियन सिविक बैंक और जागरेब शहरी साइकल चलाने वालोंकी मीटिंग में आयोजित कार्यक्रम शामिल है।

साइक्लोनोमिआ बुडापेस्ट में एक वैकल्पिक स्थान नोहा स्टूडियों में स्थित है। १० यूरों की सदस्यता शुल्क लोगों को सहभागी और उत्सव वाले माहौल में अपनी साइकल को मरम्मत करने का अवसर देने के साथ में दूसरों से सीखनें, मिलने, सहायता और सहयोग का अवसर भी उपलब्ध कराती है। यहाँ सदस्यों का स्वागत पेय से किया जाता है और बैठने की अच्छी व्यवस्था भी है। इस प्रोजेक्ट में पैसे; साइकल के पुर्जों; टायरों, अंदर वाले ट्यूब, औजारों, रवाना आदि को अनुदान के रुप में दिया जा सकता हैं। इसमें लोगों को साइकल को पुन:बनाने, मरम्मत और मिट्टी के बर्तन बनाने के काम दिये जाते है। कार्यशाला का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यहाँ स्थानी भोजन उत्पादन करने वाले समूह सजेट्योर का बिक्री केंद्र भी है। यहाँ प्रत्येक सप्ताह लोगों को स्थानीय फलों और सब्जियों को दिया जाता है।

साइक्लोनोमिआ में विद्यार्थियों के लिये कार्यशाला भी आयोजित की गयी थी जिसका उद्देश्य साइकल टेलरों और कार्गों साइकल को बनाने और इनके उनके लिये नये उपयोगों पर प्रशिक्षण से जुड़े ज्ञान और तकनिकी पहलुओं को लोगों तक पहुंचना है। अन्य समूहों के साथ मिलकर साइकलोंनोमिंआ ने गरीबों के घरों को गर्म करने के लिये पेपर काटने की मशीन और पेपर ईट प्रेस बनाने में भी भागीदारी की है।

विश्व के कई स्थानों की तरह बुडापेस्ट में भी बदलाव का दौर अच्छी तरह चल रहा है और विकल्पों के समूह का हिस्सा होने पर साइक्लोनोमिआ रहने,उत्पादन और बांटने के नये तरीकों को लोगों को उपल्ब्ध कराने की ओर अग्रसर हैं।

✦✦

पाठकों के लिए संदेश:
प्रिय पाठकों, यदि आप समुदाय व संरक्षण की प्रति किसी अलग पते पर प्राप्त करना चाहते है तो कृपया हमें अपना पता kvoutreach@gmail.com पर या नीचे लिखे पते पर भेज दें।

कल्पवृक्ष
डकुमेंटेशन एंड आउटरीच सेंटर, अपार्टमेंट ५, श्री दत्ता कृपा, ९०८
डेक्कन जिमखाना पूणे ४११००४
महाराष्ट्र : भारत
वेबसाइट : www.kalpavriksh.org

समुदाय व संरक्षण : समुदाय आधारित जैव विविधता संरक्षण तथा आजीविका सुरक्षा अंक ६, नं.१, डिसेंबर २०१४ – मे २०१५

संकलन और संपादन : मिलिन्द वाणी

परामर्श एवं संपादकीय सहयोग : नीमा पाठक

सहयोग : मयंक देव, विकल समदरिया

संपादकीय सहयोग : अनुराधा अर्जुनवाडकर, शर्मिला देव, पंकज शेखसरिया, सीमा भट्ट

फोटो : इनांक टेकगुरु, आशिष कोठारी, नरेश गौतम, जयंति सना, त्सेवांग रिगजिन

अनुवाद : विकल समदरिया

प्रकाशक :
कल्पवृक्ष,
अपार्टमेंट ५, श्री दत्ता कृपा, ९०८,
डेक्कन जिमखाना, पुणे–४११००४.
फोन : ९१–२०–२५६७५४५०,
फैक्स : ९१–२०–२५६५४२३९
ई–मेल : KVoutreach@gmail.com,
वेबसाइट : www.Kalpavriksh.org

आर्थिक सहयोग : मिजेरिओर, आचेव, जर्मनी

निजी वितरण के लिये

प्रकाशित विषयवस्तु (Printed matter)

सेवा में,